सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

जयपुर। हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए अब तक आईसीडी मशीन और कम हृदय गति और पंपिंग को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार

हार्ट फेलियर के मरीजों को विशेषज्ञों ने दी जानकारी

इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है।

हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने ऐसी ही जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम हो जाती है तो मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति, दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट - कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

हार्ट फेलियर के मरीजों को विशेषज्ञों ने दी जानकारी

जयपुर। (कारंज)। हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए अब तक आईसीडी मशीन और कम हृदय गति को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है।

हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने ऐसी ही जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम हो जाती है तो मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति, दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट

कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार, हार्ट फेलियर के मरीजों को विशेषज्ञों ने दी जानकारी

संवाददाता टुडे

जयपुर। हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए अब तक आईसीडी मशीन और कम हृदय गति को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है।

हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने ?सी ही जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम हो जाती है तो मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति, दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट

कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार, हार्ट फेलियर के मरीजों को विशेषज्ञों ने दी जानकारी

संवाददाता टुडे

जयपुर। हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए अब तक आईसीडी मशीन और कम हृदय गति को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है।

हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने ?सी ही जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम हो जाती है तो मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति, दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट

कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

हार्ट फेलियर के मरीजों को विशेषज्ञों ने दी जानकारी

जयपुर। (कारंज)। हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए अब तक आईसीडी मशीन और कम हृदय गति को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है।

हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने ?सी ही जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम हो जाती है तो मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति, दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट

कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार, हार्ट फेलियर के मरीजों को विशेषज्ञों ने दी जानकारी

संवाददाता टुडे

जयपुर। हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए अब तक आईसीडी मशीन और कम हृदय गति को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है।

हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने ?सी ही जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम हो जाती है तो मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति, दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट

कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार, हार्ट फेलियर के मरीजों को विशेषज्ञों ने दी जानकारी

जयपुर मिड-डे टाइम्स

जयपुर। हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए अब तक आईसीडी मशीन और कम हृदय गति को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है। हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने ?सी ही जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम हो जाती है तो मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति, दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट : कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेल्योर का खतरा

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट

कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित हुई जागरुकता सेमिनार में बोले विशेषज्ञ

जयपुर। हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए आईसीडी मशीन और कम हृदय गति व पंपिंग को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है।

हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने ?सी ही जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम होने पर मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था, लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट

कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है।

गंभीर मरीजों के लिए कृत्रिम हार्ट: कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है।

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

सीआरटी-डी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित सेमिनार में बोले विशेषज्ञ

जयपुर। हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए आईसीडी मशीन और कम हृदय गति व पंपिंग को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है।

हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने ?सी ही जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम होने पर मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था, लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट

कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

अवेयरनेस सेमिनार : हृदय रोगियों को विशेषज्ञों ने दी जानकारी, नई तकनीकों-मशीनों से कराया रूबरू

सीआरटीडी मशीन से कम होगा हार्ट फेलियर का खतरा

डेली न्यूज

जयपुर। 23 जनवरी

हार्ट फेलियर की स्थिति में मरीज को अचानक मौत से बचाने के लिए अब तक आईसीडी मशीन और कम हृदय गति और पंपिंग को सामान्य करने के लिए सीआरटी मशीन लगाई जाती थी। लेकिन अब इन दोनों मशीनों का काम एक ही मशीन सीआरटी-डी कर सकेगी। इससे मरीज को दोनों तरह के खतरों से बचाया जा सकता है।

हार्ट फेलियर मरीजों के लिए गुरुवार को यहां इटरनल हॉस्पिटल में आयोजित अवेयरनेस सेमिनार में हृदय रोग विशेषज्ञों ने जानकारी दी। इससे पहले हार्ट फेलियर मरीजों की त्रिसूत्रक 2डी ईको जांच व परामर्श दिया गया। सेमिनार में हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जितेंद्र सिंह मकड़ा ने बताया कि हृदय की कार्यक्षमता 33 प्रतिशत से कम हो जाती है तो मरीज को हार्ट फेलियर की समस्या हो जाती है। सीआईटी-डी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक अपना जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश भगत ने बताया कि सीआरटी-डी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इस इंप्लांटेशन के लिए डॉक्टर के पास अच्छी स्किल होनी चाहिए।

अति गंभीर मरीजों के लिए आर्टिफिशियल हार्ट

कार्डियक सांइस चेयरमैन डॉ. अजीत वानी ने कहा कि जब हार्ट फेलियर के मरीज की स्थिति ज्यादा गंभीर हो जाती है और हार्ट ट्रांसप्लांट के लिए उसे कोई डोनर नहीं मिलता तो घबराने की आवश्यकता नहीं है। आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड द्वारा ऐसे मरीजों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

मशीन से खत्मेगी जान

सीआईटी मशीन मरीज को अचानक मौत और कम हृदय गति, दोनों से बचाती है। दो दशक पहले हार्ट फेलियर के मरीज का पांच साल तक जिंदा रह पाना भी मुश्किल था, लेकिन नई दवाइयों और मशीनों की बदौलत अब ये 20 साल तक जीवन बढ़ा सकते हैं। कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कुश कुमार के अनुसार सीआरटीडी मशीन को लगाने के लिए अनुभवी विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है।

आर्टिफिशियल हार्ट एलवेड से मरीज मशीनों को भी बचाया जा सकता है। इसके लिए आर्टिफिशियल हार्ट को इंप्लांट किया जाता है। यह मशीन मरीज के प्राकृतिक हृदय की तरह काम करता है। इटरनल हॉस्पिटल के सीईओ डॉ. प्राचीश प्रकाश ने हॉस्पिटल में हार्ट फेलियर मैनेजमेंट की सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर मरीजों ने हार्ट डिजीज संबंधी सवाल भी पूछे।

Call Now : 95491 58888 | www.eternalhospital.com